हर जगह अजनबी

भारतीय कला में सफ़र

पूजा वैश द्वारा क्यूरेटेड

बहुत सारी जगहों से जुड़े होने के माने क्या होते हैं? 'हर जगह अजनबी: भारतीय कला में सफ़र' में आवा-जाही के क्षणों को एक ऐसी दहलीज़ की तरह देखा गया है जहाँ खड़े होकर जिन जगहों में हम रहते हैं उनसे हमारे बदलते रिश्तों के बारे में सोचा जा सकता है। इस प्रदर्शनी में आज़ादी के पहले से लेकर 2000 के दशक तक की ऐसी कलाकृतियों को जोड़कर देखने की कोशिश की गई है जो हमारी ज़िन्दगी में जगहों के अर्थ को सामने रखती हैं।

भारत के इतिहास के सन्दर्भ में देखें तो यह प्रदर्शनी उन स्थितियों को उभारती है जो लोगों के लिए किसी जगह पर रहने, किसी जगह पर जाने, किसी जगह को छोड़ने या वहाँ लौटने की वजह बनीं। यहाँ इस आवा-जाही की पड़ताल जिए गए अनुभवों और भौगोलिक परिदृश्य से मनोवैज्ञानिक जुड़ाव के रूप में की गई है। इसलिए इस प्रदर्शनी के कई हिस्से हैं जो जगह के सवाल तक पहुँचने के बिन्दु का काम करते हैं: घर, यात्राएँ, निर्वासन, प्रवास, कलात्मक वंशावलियाँ, व्यापार व सांस्कृतिक लेन-देन।

निजी यात्राओं को सामूहिक आख्यानों में पिरो कर इस प्रदर्शनी में कला को इतिहास से जोड़ा गया है। अलग-अलग पीढ़ियों के कलाकारों की कलाकृतियों के बीच संवादों का मंचन करके इसमें भारत में जगह और समय के विचारों को जोड़कर देखने की कोशिश की गई है।

द्वारा कलाकृतियाँ:

अल्ताफ । अर्चना हांडे । अर्पणा कौर । अर्पिता सिंह । अतुल डोडिया । भूपेन खखर
चित्तप्रसाद भट्टाचार्य । एफ़ एन सूज़ा । गुलाम मोहम्मद शेख़ । गणेश हलोई । एच ए गाडे
जगदीश स्वामीनाथन । जामिनी रॉय । जितीश कल्लाट । के जी सुब्रमण्यन । के के हेब्बर
कृष्ण खन्ना । एम एफ़ हुसैन । मीरा मुखर्जी । एन एस बेंद्रे । नीलिमा शेख । पिल्लू पोचखानावाला
प्रोदोष दासगुप्ता । राम कुमार । सदानंद बाक्रे । शिबू नटेसन । सोमनाथ होर । सुधीर पटवर्धन
सुरेश बी वी । तैयब मेहता । वी एस गायतोंडे । विवान सुंदरम । ज़रीना हाशमी